जनजातीय चेतना, कला, साहित्य, संस्कृति एवं समाचार का राष्ट्रीय मासिक

ककसाड़

वर्ष 11 अंक 124 / जुलाई, 2026
मूल्य : 25/- रुपए

ककसाड़
राष्ट्रीय मासिक पत्रिका

ISSN 2456-2211

दिल्ली से प्रकाशित

ककसाड़ निम्नानुसार सदस्यता राशि

व्यक्तिगत वार्षिक	₹ 350/-	आजीवन व्यक्तिगत	₹ 3000/-
संस्था और पुस्तकालयों के लिए वार्षिक	₹ 500/-	संस्था	₹ 5000/-

सदस्यता राशि प्रेषित करने के लिए ककसाड़ बैंक खाता विवरण

• खातेदार का नाम– **ककसाड़** • बैंक– **सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, खान मार्केट, दिल्ली**
• खाता संख्या– **3483675563** • आई.एफ.एस.सी. कोड– **CBIN0280310**
• एम.आई.सी.आर. कोड–**110016018**

विज्ञापन हेतु दरें

रंगीन		श्वेत/श्याम
फुल पेज (इनर)	₹ 15,000	₹ 10,000
बैक पेज कवर	₹ 25,000	—
बैक इनसाइड कवर	₹ 10,000	—
फ्रन्ट इनसाइड कवर	₹ 20,000	—
डबल स्प्रीड (इनर)	₹ 30,000	₹ 20,000

सहयोग राशि प्रेषित करने के बाद निम्नलिखित नंबर पर एस.एम.एस./फोन अथवा ई-मेल द्वारा तत्काल भेजें– 09968288050/09425258105/011-22728461, kaksaadeditor@gmail.com

कार्यालय—सी-54 रिट्रीट अर्पाटमेंट, 20-आई.पी. एक्सटेंशन, दिल्ली-110092

ककसाड़ पत्रिका और लिटिल बर्ड प्रकाशन की पुस्तके यहाँ भी उपलब्ध है:

1. मौर्या बुक स्टाल
बी.एच.यू गेट लंका, वाराणसी-221005 उ.प्र.

2. राजू मैगजीन सेन्टर
दुकान न.1, ओम साई गेस्ट हाउस (SBI ATM के पास) लंका, वाराणसी -221005 उ.प्र.

3. दीवान न्यूज एजेंसी
सदर बाजार, झाँसी-284001 उ.प्र.

4. पंजाब बुक सेंटर
एस.सी.ओ. 1126-27, सेक्टर-22 बी, चंडीगढ़-160022 हरियाणा

5. लालमुनि बुक स्टाल
आर.एम.शाह चौक, पूर्णिया-854301 (बिहार)

6. सेन्ट्रल न्यूज एजेंसी
110, ई- बंगला साहिब रोड, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001

7. स्टूडेंड कॉर्नर
गोलघर सिनेमा रोड, गोरखपुर-273003 उ.प्र.

8. यूनिवर्सल बुक हाउस
शॉप न.17, विक्रम बिल्डिंग, लंका, वाराणसी-221005 उ.प्र

9. गीता पुस्तकालय
दुकान न.17, श्री विश्वनाथ मंदिर, बी.एच.यू, वाराणसी-221005 उ.प्र.

10. सेन्ट्रल न्यूज एजेंसी
डिपार्टमेंट एल.सी, 4-ई/15, अशोक सेंटर झंडेवालान एक्स, नई दिल्ली-110055

11. इंडियन बुक डिपो
आदित्य भवन, प्रथम तल, बी.एन.वर्मा रोड अमीनाबाद पो.ऑ. के सामने, लखनऊ-226018 उ.प्र.

ककसाड़

(जनजातीय चेतना, कला, साहित्य, संस्कृति एवं समाचार का राष्ट्रीय मासिक)

जुलाई 2026 **वर्ष-11 • अंक-124**

संस्थापना वर्ष 2015

प्रबंध एवं परामर्श संपादक
कुसुमलता सिंह

संपादक
डॉ. राजाराम त्रिपाठी

कानूनी सलाहकार
फैसल रिजवी, अपूर्वा त्रिपाठी

•

ग्राफिक डिजाईन
रोहित आनंद

• मुख्य कार्यालय एवं रचनाएँ भेजने का पता •

सी-54 रिट्रीट अपार्टमेंट, 20-आई.पी. एक्सटेंशन, पटपड़गंज, दिल्ली-110092

फोनः 9968288050, 7048905277

•

• संपादकीय कार्यालय •

151, डी.एन.के. हर्बल इस्टेट, कोण्डागाँव, छ.ग.-494226

फोनः 9425258105, 07786-242506

ई-मेल : kaksaadeditor@gmail.com
kaksaadoffice@gmail.com

वेबसाइट : www.kaksad.com

मूल्य : **रु. 25** (एक प्रति), वार्षिक : **रु. 350/-** संस्था और पुस्तकालयों के लिए वार्षिक : **रु. 500/-** वार्षिक (विदेश) : **$110** यू.एस। आजीवन व्यक्तिगत : **रु. 3000/-** संस्था : **रु. 5000/-**

संपादन-संचालन पूर्णतः अवैतनिक एवं अव्यवसायिक

दिल्ली से प्रकाशित होने वाली 'ककसाड़' पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं जिनसे संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं।

• ककसाड़ से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे • **कुसुमलता सिंह** स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक।

अनुक्रम

दिल्ली लाइब्रेरी बोर्ड (संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार) द्वारा पुरस्कृत

4. **संपादकीय**

साक्षात्कार

6. लेखन की अपेक्षा चित्रकला से पुरानी मैत्री रही है (आदिवासी साहित्य और कला से संबद्ध **डॉ. पुनीता जैन** से **कुसुमलता सिंह** की बातचीत)

लेख/शोध-आलेख

8. बस्तर की बोली-भाषा : **शिव कुमार पाण्डेय**
12. हिंदी आदिवासी कविताएं और अस्तित्व का प्रश्न : **श्री आनंद दास**
17. बुंदेलखण्ड की विलुप्तप्राय नाट्य परम्परा - राजा मोरध्वज : **डॉ. शिवम् शर्मा**
20. इड़ा पीड़ा घेऊन जा गे मारबत : **आभा सिंह**
22. डॉ. विद्यानिवास मिश्र का चिंतन और वर्तमान समाज : एक अनुशीलन : **सत्यानंद त्रिपाठी**
25. मुरिया श्रृंगार : तलाकारसंग : **दीप्ति ओग्रे**

कहानी

27. लव सिंड्रोम : **लेखक - परमजीत ढींगरा**
अनुवाद - नीलम शर्मा 'अंशु'
31. दो भले व्यक्ति (विदेशी कहानी) : **ग्राहम ग्रीन हेनरी**
35. आपसी बाजी : **दीपक शर्मा**

कविताएँ/ग़ज़लें

37. **राजलक्ष्मी जायसवाल,** 37. **डॉ. निर्मल कुमार सैनी** 38. **अद्वैत श्रीवास्तव** 39. **अनिरूद्ध सिन्हा** 40. **अशोक 'अंजुम'**

लोक-शिल्प

41. भारत के पारम्परिक हस्त शिल्प : **निर्मला डोसी**

भावांजलि

43. शायर बशीर बद्र को याद करते हुए... : **डॉ. जियाउर रहमान जाफरी**

पुस्तक चर्चा

45. इमरजेंसी की अनसुनी कहानियाँ : **कुसुमलता सिंह**

पुस्तक समीक्षा

47. मंटो साब : दोस्तों की नजर में : **प्रो. जयराम सूर्यवंशी**
48. हथेली पर कर्ण : **गंगाशरण सिंह**
34. **कहावतें**
24. **क्या है ककसाड़?**
11. **यादें**
42. **लघुकथा**
49 **साहित्यिक समाचार**

आवरण कलाकृति - पुनीता जैन
मो.: 94250-10223

संपादकीय

आपकी प्रिय पत्रिका 'ककसाड़' का जुलाई का अंक अपने निर्धारित समय पर आपके हाथों में है। ककसाड़ के अन्य अंको की भांति ही यह अंक भी अपने आप में अनूठा है और संग्रहणीय रचनाओं से भरपूर है, इसका हमें संतोष है।

इधर वर्षा ऋतु हमारे वैज्ञानिकों के सारे दावों को एक बार फिर से झुठलाते हुए हमारे द्वार पर आकर ठिठक गई है। आषाढ़ अपने नियत समय पर आया अवश्य, परंतु जैसे किसी रूठे हुए अतिथि की तरह, जो बिना भीतर आए ही लौट जाने की जिद पर अड़ा हो। किसान की निगाहें अब भी आकाश में अटकी हैं। धरती की देह फट रही है, ताल तलैया दम तोड़ चुके हैं, नदियों की साँसें उखड़ रही हैं और किसान के मन में घनघोर आशंकाएँ उमड़ रही हैं।

यह दुर्योग ही था कि इसी जून के अंतिम सप्ताह में जब मैं फ्रांस की राजधानी पेरिस में था, उसी समय पेरिस फ्रांस सहित पूरा यूरोप भीषण हीट वेव की गिरफ्त में था। पेरिस, जिसे दुनिया अपने सौंदर्य, अनुशासित नगरीय नियोजन और हरियाली के लिए जानती है, वहाँ की तपती सड़कों पर चलते हुए मुझे लगा जैसे प्रकृति मनुष्य की विकसित सभ्यता तथा तकनीकी विकास के अहंकार का सार्वजनिक परीक्षण कर रही हो। विशाल वृक्षों से आच्छादित बुलेवार्ड, शहर के चारों ओर फैले हरित क्षेत्र, हरियाली से सजे राजमार्ग, आधुनिक शीतलन व्यवस्था और अरबों यूरो की पर्यावरणीय परियोजनाओं के बावजूद फ्रांस प्रकृति के प्रकोप के सामने असहाय दिखाई दिया। फ्रांस की सार्वजनिक स्वास्थ्य एजेंसी के अनुसार हाल की हीट वेव के दौरान देश में एक हजार से अधिक अतिरिक्त मौतें दर्ज की गईं। अधिकांश मृतक बुजुर्ग थे, किंतु संदेश सम्पूर्ण मानव सभ्यता के लिए था।

केवल फ्रांस ही क्यों? पूरे यूरोप में लगभग 19 करोड़ लोग 35 डिग्री सेल्सियस से अधिक तापमान झेलने को विवश हुए। जर्मनी, पोलैंड, चेक गणराज्य और हंगरी जैसे देशों में तापमान के पुराने सारे रिकॉर्ड टूट गए। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने स्वीकार किया कि इस भीषण गर्मी ने यूरोप में 1300 से अधिक अतिरिक्त मौतें दर्ज कराईं।

प्रकृति समय-समय पर मनुष्य को उसकी सीमाएँ याद दिलाती रहती है। किंतु आधुनिक मनुष्य, विशेषकर तथाकथित विकसित समाज, स्वयं को प्रकृति का स्वामी मान बैठा है। हमने नदियों को नालों में बदल दिया, जंगलों को उद्योगों के हवाले कर दिया, पर्वतों को विस्फोटकों से छलनी कर दिया और अब जब प्रकृति प्रतिकार कर रही है, तब हम सम्मेलनों, घोषणाओं और कार्बन क्रेडिट के व्यापार में समाधान खोज रहे हैं। संस्कृत का एक अत्यंत सारगर्भित वचन है—

'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।'

(अर्थात, यह पृथ्वी हमारी माता है और हम उसके पुत्र हैं।)

दुर्भाग्य यह है कि आधुनिक मनुष्य ने अपनी ही माता को उपभोग की वस्तु समझ लिया है। अब कुकर्म-फल तो भोगना ही पड़ेगा।

अंग्रेज दार्शनिक और कवि टी. एस. इलियट ने लिखा था,

'Humankind cannot bear very much reality.'

(अर्थात मनुष्य बहुत अधिक यथार्थ सहन नहीं कर सकता।)

आज जलवायु परिवर्तन वही कठोर यथार्थ बनकर हमारे सामने खड़ा है, जिससे आँखें चुराना अब संभव नहीं।

भारत में भी स्थिति कम चिंताजनक नहीं है। इस वर्ष मानसून लगभग एक माह तक विलंबित रहा। देश के अनेक हिस्सों में बुवाई प्रभावित हुई है। कृषि वैज्ञानिकों का मानना है कि यदि वर्षा का वितरण असंतुलित रहा, तो खरीफ उत्पादन पर गंभीर प्रभाव पड़ सकता है। विश्व की सर्वाधिक जनसंख्या वाले देश भारत के लिए यह केवल कृषि संकट